



## उपलब्धि और अभिप्रेरणा : एक अध्ययन

हरिशंकर यादव

शोध-छात्र

**Paper Received On:** 21 June 2024

**Peer Reviewed On:** 25 July 2024

**Published On:** 01 August 2024

उपलब्धि और अभिप्रेरणा क्या है ?

“जन्मोपरांत मानव मस्तिष्क एक कोरा कागज होता है”

प्रसिद्ध अंग्रेजी दार्शनिक जॉन लॉक के उपर्युक्त पंक्तियों को आधार बनाते हुए हम समझ सकते हैं कि प्रारंभ में मानव मस्तिष्क बिल्कुल कोरे कागज की भाँति होती है जो हमारे परिवेश/वातावरण के आधार पर सकारात्मक व नकारात्मक स्वरूप धारण करती रहती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जन्मोपरान्त, किसी भी क्षेत्र में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से व्यक्ति के पूर्वस्थिति तथा वर्तमान की स्थिति के बीच आया सकारात्मक बदलाव ही उपलब्धि कहलाएगी।

उदाहरणस्वरूप हम कुछ निम्न बिंदुओं को देखेंगे -

- जन्म के पश्चात् बालक जब विभिन्न क्रियाओं (जैसे - चलना, बैठना, दौड़ना आदि) से बिल्कुल अज्ञान होता है और फिर समय के साथ वह इन क्रियाओं में पारंगत हासिल कर लेता है तो यह उस तथागत बच्चों की एक उपलब्धि हो जाती है, और शायद सार्वभौमिक रूप से इसे मानव जीवन की प्रथम उपलब्धि कहा जा सकता है।
- जीवन के अगले पड़ाव में अब बालक जब पहली बार अक्षर ज्ञान सीख जाता है तो यह उसकी शैक्षिक उपलब्धि हो जाएगी।

- भाषायी क्षेत्र में जब बच्चा पहली बार बोलना सीख जाता है तो भाषा के क्षेत्र में यह उसकी उपलब्धि हो जाती है, और तत्पश्चात् जब वह अन्य भाषाओं को भी कभी सीखता है तो वह अगली उपलब्धि हो जाएगी।

उपर्युक्त विभिन्न बिंदुओं को देखते हुए अब हम उपलब्धि को कई भागों में बाँट सकते हैं।

- (i) शैक्षिक उपलब्धि
- (ii) भाषायी उपलब्धि
- (iii) शारीरिक उपलब्धि
- (iv) क्रियात्मक उपलब्धि आदि।

### उपलब्धि की विशेषताएँ -

निःसंदेह कहा जा सकता है कि उपलब्धि मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण पहलू है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह मानव प्रजाति को अन्य प्राणियों से अलग बनाता है। इसकी विशेषताओं की तरफ अगर ध्यान दिया जाए तो कुछ इस प्रकार होगा -

- (क) उपलब्धि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है।  
(कहा जा सकता है कि इसकी कोई एक निर्धारित सीमा नहीं होती है, व्यक्ति किसी क्षण या किसी आयु में इसे किसी भी क्षेत्र में अपने मेहनतानुसार प्राप्त कर सकता है। जैसे - अगर व्यक्ति 55 वर्ष की आयु का हो और उसने तकनीक के क्षेत्र में ब्लॉगिंग आदि सीख रहा हो तो यह भी एक उसकी उपलब्धि है। )
- (ख) उपलब्धि हमें अधिगम क्षमता में वृद्धि करती है। (जैसा कि हम जानते हैं कि बिना किसी क्षेत्र का अधिकाधिक ज्ञान लिए बगैर उपलब्धि हासिल नहीं कर सकते हैं अर्थात् नयी उपलब्धि अर्जित करने के लिए नए ज्ञान को ग्रहण करना आवश्यक है, इससे हमारे अधिगम में भी काफी वृद्धि होती है।)
- (ग) यह एक सामान्य से विशिष्ट की तरफ चलने वाली प्रक्रिया है।  
(अर्थात् उपलब्धि प्राप्त करने से पूर्व मानव सामान्य होता है तथा धीरे-धीरे उपलब्धि प्राप्ति तक इसमें वे विशिष्ट गुण आ जाते हैं।)
- (घ) यह एक नयी ऊर्जा संचार करती है।

(उपलब्धि प्राप्ति के पश्चात् मानव को एक नव सकारात्मक ऊर्जा मिलती है जो अगले कार्यों के लिए उसे प्रेरित करती है।)

उपर्युक्त उपलब्धि की विशेषताओं को देखते हुए हम इसकी महत्ता को समझ सकते हैं जो मानव को बेहतर जीवन देने का एक प्रमुख कारक है।

### अभिप्रेरणा -

प्रेरणा, तथागत शब्द अंग्रेजी भाषा के Motivation शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।

व Motivation शब्द लैटिन भाषा के मोटम (Motom) से लिया गया है जिसका अर्थ होता है 'गति'। (Mote, Motor or Motion)

अब अगर साधारण शब्दों में कहा जाए तो एक ऐसी आंतरिक शक्ति जो व्यक्ति को कार्य करने को प्रेरित करे, प्रेरणा कहलाती है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक ने अलग-अलग प्रकारों से इसे परिभाषित किया है। जैसे -

“प्रेरणा कार्य को आरंभ करने, जारी रखने तथा नियमित रखने की प्रक्रिया है।” - गुड

“प्रेरणा सीखने के लिए राजमार्ग है।” - स्किनर

“अभिप्रेरणा विद्यार्थी में रुचि उत्पन्न करने की एक कला है, ऐसी रुचि जो या तो छात्र में है ही नहीं या इस रुचि का उसे आभास ही नहीं है।” - थामसन

पुनः अगर साधारण शब्दों में समझने का प्रयास करें तो -

(क) एक पक्षी का घोंसला जब बिखर जाता है तो वह फिर से पत्तों, तिनकों को इकट्ठे कर घोंसले बनाने में लग जाता है, आखिर क्यों ?

(ख) या फिर परीक्षा अवधि आने पर बच्चे आधी-आधी रात तक मेहनत करने लगते हैं,

आखिर पढ़ाई से निरुचित वह बच्चा इतना क्यों पढ़ने लगा ?

उपर्युक्त प्रश्नों में देखे तो 'क्यों' का प्रश्न ही प्रेरणा है। क्रैच एवं क्रैचफील्ड ने भी इस तथागत शब्दों को प्रेरणा के परिभाषा के रूप में प्राथमिकता दी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि -

- (i) हार कर थके हुए लोगों को जगाना
- (ii) जिंदगी को नियंत्रित करने
- (iii) कार्य में शक्ति बढ़ाने
- (iv) लक्ष्य हेतु मेहनत करना आदि केवल व केवल प्रेरणा जैसी शक्ति के माध्यम से ही संभव हो पाता है।

अब अगर हम इस प्रकार की शक्ति का बात करें तो प्रेरणा रूपी यह शक्ति मुख्यतः दो प्रकार की मानी जाती है -

(क) आंतरिक प्रेरणा

(ख) बाह्य प्रेरणा

**(क) आंतरिक प्रेरणा -**

बालक में अन्तर्निहित ऐसी शक्ति जो उसके अन्तर्निहित संतुष्टि के लिए गति प्रदान करे, आंतरिक प्रेरणा कहलाती है।

तथागत अवस्था में व्यवहार किसी भी बाहरी आकस्मिकता की अनुपस्थिति में किया जाता है। जैसे:- - परोपकार करना, अपना कार्य अच्छी तरह करना, अधिक ज्ञान की खोज करना।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आंतरिक प्रेरणा से हम अनुभव, कार्यकुशलता और कार्य में महारत हासिल करते हैं।

प्रारंभ में प्रेरणा स्वतंत्र थी परन्तु, 'डेसी और लीपर' ने इसे आंतरिक रुचि तथा बाह्य कारकों पर विभाजित किया।

अंततः हम आंतरिक प्रेरणा के कुछ निम्न उदाहरणों पर ध्यान दे सकते हैं -

- (क) किसी प्रकार के खेल में भाग लेना क्योंकि हमारी रुचि आंतरिक रूप में उत्साहित कर रही है।
- (ख) उम्र के किसी भी पड़ाव में नए-नए ज्ञान सीखने की इच्छा तथा किसी नए भाषा व कौशल को सीखने की हमारी उत्साहना।

निःसन्देह यह उत्साहना हमें आंतरिक रूप से प्राप्त होती है और हम इसे पूर्णता देने हेतु बिना किसी बाह्य प्रलोभन के उत्साहित रहते हैं।

हांलांकि यह उत्साहना उम्र के काफी मध्य या आखिरी पड़ाव तक आते हैं और व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा इसे अस्तित्व में रखती है केवल व केवल आत्म संतुष्टि हेतु।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि “आत्म संतुष्टि का अन्य नाम ही आंतरिक प्रेरणा है।”

निष्कर्षस्वरूप कहा जा सकता है कि वे सभी कार्य जो हम अपने आत्म संतुष्टि हेतु संचालित करते हैं वे सभी आंतरिक प्रेरणा के ही प्रकार हैं।

इसके विपरीत, वे सभी बाह्य कारक जो व्यक्ति को किसी प्रकार के कार्य करने हेतु गति प्रदान करे अर्थात् तथागत कारकों को ही माध्यम बनाते हुए व्यक्ति कार्य को लेकर उत्साहित रहें जैसे : धन, प्रसिद्धि, प्रशंसा आदि बाह्य अभिप्रेरणा कहलाता है।

देखा जाए तो तथागत प्रेरणा का यह प्रकार एक सीमा तक ही वैध हो पाती है। इसे लघुकालिक उद्देश्य के लिए ही सहारा बनाया जा सकता है क्योंकि, निःसन्देह कोई भी दीर्घकालिक परियोजनाएँ इस मापदण्ड से नहीं हो पाएगा।

उदाहरणस्वरूप देखें तो एक बच्चा जो पढ़ाई में अधिक रुचि नहीं दिखाता है, ससमय परीक्षा अवधि में उसके माता-पिता बाह्य प्रेरणा जैसे भिन्न-भिन्न पुरस्कारों से प्रेरित कर उसे उत्तीर्ण करवाने में सफल हो जाते हैं। परन्तु यह कारक अधिक समय तक साथ नहीं दे पाएगा और बच्चा बस कक्षा उत्तीर्णता की सीढ़ी तक ही रह जाएगा।

इसके विपरीत एक अन्य बच्चा जो आंतरिक रूप से प्रबलता के साथ जीवन में कुछ करने की चाह रखता है इसपर वह बिना किसी प्रकार का बाह्य कारक प्राप्त किए बिना भी आंतरिक प्रेरणा के बदैलत अपने लक्ष्य को जरूर हासिल कर पाएगा।

अर्थात् बच्चे के माध्यम से समझा जा सकता है कि आंतरिक प्रेरणा वाक्यी ही एक दीर्घकालिक कारक है अपेक्षाकृत बाह्य प्रेरणा के।

इन सभी के अलावा बाह्य प्रेरणा के कई अन्य उदाहरण भी हमारे चारों तरफ व्यापक रूप से पाए जाते हैं। जैसे :-

1. एक कर्मचारी जो अतिरिक्त बोनस पाने हेतु कार्य करता है। यहाँ ‘बोनस’ उसके लिए बाह्य प्रेरणा है।

2. एक छात्र शिक्षक से प्रशंसा पाने हेतु पढ़ाई में अधिक ध्यान लगाता है। यहाँ 'प्रशंसा' बाह्य कारक हो जाएगी।

हालांकि ध्यान दिया जाए तो प्रेरणा का यह बाह्य कारक (पैसा, प्रशंसा आदि) व्यक्तियों में नकारात्मक शक्ति देने का भी कार्य यथासंभव कर देता है। आज के समकालीन समाज में तथागत उदाहरणों की भरमार पड़ी है।

अधिकांश व्यक्ति इन बाह्य प्रेरणाओं से प्रभावित होकर अपनी मानवता, अच्छाई सब भूल बैठता है। इसका ध्येय बस बाह्य प्रेरणा की प्राप्ति रह जाती है चाहे तरीका कोई भी हो।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यक्तियों के लिए एक सीमा तक ही बाह्य प्रेरणा असरदायक हो पाएगी।

उपरोक्त प्रमुख विश्लेषण के पश्चात् अब अगर प्रेरणा और उपलब्धि के मध्य संबंधता को ध्यान दिया जाए तो यह एक जायज विषय होगा।

### **प्रेरणा और उपलब्धि में संबंधता -**

जैसा कि पूर्व पृष्ठों में हम प्रेरणा व उपलब्धि तथागत दोनों शीर्षकों से भलीभांति परिचित हो चुके हैं, और इन्हें ही ध्यान में रखते हुए हम इनकी संबंधता की जाँच कर सकते हैं। वैसे देखा जाए तो प्रेरणा और उपलब्धि को एक दूसरे का पूरक बताना गलत नहीं होगा। हमारी उपलब्धि कैसी होगी और क्या होगी, निश्चिततः यह प्रेरणा के द्वारा ही तय हो पाएगी।

जैसे अगर हमारे अंदर या बाहर की प्रेरणा (गति) अत्यधिक मजबूत व सक्रिय होगी तो निःसंदेह हमारी उपलब्धि भी विशाल व टिकाऊ होगी।

उदाहरणस्वरूप हम एक दुकानदार को लेते हैं जो वाक्यी काफी मेहनती है अपने कार्य के प्रति भी काफी कर्मठ है अर्थात् उसे एक प्रबल आंतरिक प्रेरणा से पूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है दूसरी ओर उसे आज शाम तक घर एक निश्चित राशि को लेकर ही जाना है, इस प्रकार आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के प्रेरणाओं से घिरे वह व्यक्ति संभावित उपलब्धि जरूर ही प्राप्त करेगा। अर्थात् प्रेरणा जितनी अधिक होगी तथागत उपलब्धि भी उतनी बड़ी होगी।

अधिक प्रेरणा = अधिक उपलब्धि

### स्थिति नं०-2

यहाँ उदाहरण के रूप में हम एक बच्चे को लेंगे जो नौवीं का छात्र है। अगले वर्ष उसके परीक्षा परिणाम में बेहतर प्रदर्शन हेतु उसके माता-पिता की चाह है, परन्तु वह बच्चा आंतरिक रूप से किसी भी प्रकार का रुचि नहीं रख पाता है फिर भी माता पिता के द्वारा उसे बाह्य प्रेरणा दिया जाता है।

दुर्भाग्यवश अब परीक्षा अवधि में तथागत बच्चे को माता पिता से दूर होना पड़ता है और बाह्य प्रेरणा मिलना बंद हो जाता है।

परिणामस्वरूप अब उसके परिणाम के रूप में उपलब्धि देखा जाता है तो प्रदर्शन बेहतर नहीं रहा। अर्थात् उपलब्धि कम मिली।

इस प्रकार यहाँ भी कहा जा सकता है कि उपलब्धि प्रेरणा पर पूर्णतः निर्भर करती है।

स्थिति नं०-2 के अनुसार -

निम्न प्रेरणा = निम्न उपलब्धि

उपरोक्त पहलु को हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि प्रत्येक वह सफल व्यक्ति जो सफलता के अधिकतम ऊँचाई को चूम रहा हो, कहीं न कहीं तथागत व्यक्ति आंतरिक व बाह्य दोनों या फिर किसी भी एक ही प्रेरणा के प्रकार से भरपूर था।

उदाहरण के तौर पर हम हालिया दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति 'एलन मस्क' को ही लेते हैं। Space-X, टेस्ला आदि विशाल कम्पनियों के संस्थापक यह दिग्गज व्यापारी अपने बालकाल से ही आंतरिक प्रेरणाओं से (रुचि) दृढ़ व परिपूर्ण रहा।

परिणामस्वरूप इन्होंने मात्र 12 वर्ष की उम्र में अपने आंतरिक शक्तियों के बदौलत एक वीडियो गेम तैयार कर डाला तथा बाह्य प्रेरणा के रूप में इस व्यक्ति ने सदैव गरीबी को देखा। फिर इस आंतरिक प्रेरणा गुणन बाह्य प्रेरणा के प्रतिफल के रूप में इनकी प्रचंडकाय उपलब्धि आज हमारे समक्ष दर्शित है।

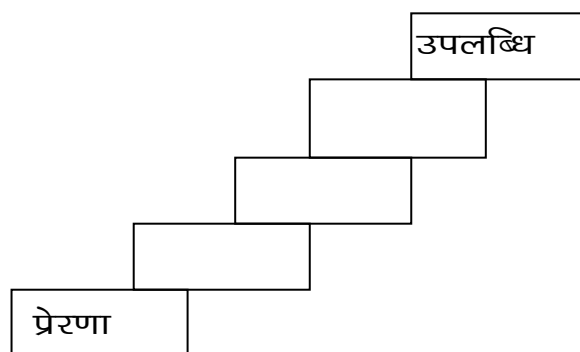
खैर उपलब्धि के इतिहास में यह अकेला उदाहरण नहीं है। अन्य बड़े-बड़े दिग्गजों का संबंध कुछ इसी प्रकार रहा।

अंततः हम मान सकते हैं कि प्रेरणा एक ऐसी सीढ़ी है जो मनुष्य को उपलब्धि तक पहुँचाने का कार्य करती है।

### प्रेरणा से उपलब्धि तक का सफर :

निःसन्देह प्रेरणा वह माध्यम है जिसके द्वारा उपलब्धि तक पहुँचा जा सकता है। लेकिन यँ अगर विस्तारित रूप से देखें तो हम प्रेरणा को आधार की एक सीढ़ी मान सकते हैं तथा उपलब्धि को उपर की सीढ़ी।

इस तथागत आधार व उँचाई की सीढ़ियों को अन्य कई कारक जोड़ने का कार्य करती है। इन विभिन्न कारकों का रूप हम कुछ इस प्रकार से देखेंगे—



#### (i) रुचि या आवश्यकता :

रुचि अर्थात आंतरिक प्रेरणा या फिर आवश्यकता अर्थात बाह्य प्रेरणा, यही वे प्रथम कारक हो जाते हैं जो आंतरिक या बाह्य या फिर दोनों प्रकार से व्यक्ति को उपलब्धि की तरफ प्रथम सीढ़ी पर चढ़ाने का कार्य करता है। साधारण शब्दों में कहें तो, कोई भी व्यक्ति रुचि होने या फिर किसी प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर ही उपलब्धि के विषय में सोचेगा या यँ कहे कि कार्य के प्रति खुद को समर्पित करेगा, और उसका यह कार्य समर्पण अप्रत्यक्षता से उपलब्धि के करीब ले जाएगा।

#### (ii) अवधान या परिकल्पना :

तथागत सीढ़ी पर खुद को पाते ही व्यक्ति अब अपने रुचि या आवश्यकता के कारण, विवेचना आदि विभिन्न पहलूओं पर अवधान करेगा।

“यहाँ अवधान से हमारा तात्पर्य किसी विषयवस्तु पर चेतना केन्द्रित करना है।”



जब वह अवधान करते हुए तर्क-वितर्क करेगा तो निःसन्देह किसी प्रकार के परिकल्पना पर उसका मस्तिष्क स्थिर होगा, और यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की परिकल्पनाएँ उसके सामने होगी। उन परिकल्पनाओं में से ही व्यक्ति तर्क शक्ति के अनुसार एक परिकल्पना को चयनित करेगा।

अब अपनी रुचि व आवश्यकता के अनुसार परिकल्पना को ढूँढ़ना व्यक्ति के उपलब्धि की तरफ दूसरी पीढ़ी हो जाती है।

### (iii) संचालन :

अपने ढूँढ़े गए परिकल्पना के आधार पर व्यक्ति अब अपने कार्यों के रूप में उसे अंजाम देना प्रारंभ करता है। उस तथागत किए गए कार्य संचालन के रूप में उसे कुछ न कुछ सकारात्मक प्रभाव/बदलाव देखने को जरूर मिलता है। हाँ लेकिन यह अनिवार्य नहीं कि प्राप्त किया गया वह सकारात्मक बदलाव बड़ा ही हो। बदलाव का क्षेत्र व्यक्ति की कार्य कुशलता व मेहनत पर निर्भर हो जाता है। ऐसा हो सकता है कि व्यक्ति प्रथम प्रयास में सकारात्मक बदलाव (उपलब्धि) आंशिक रूप से प्राप्त करेगा परन्तु अब वह धीरे-धीरे अपने संचालन तरीकों में बदलाव लाते हुए एक समय बाद उपलब्धि की अधिकतम सीमा तक पहुँच जाएगा।

इस प्रकार उपर्युक्त चरणों को देखते हुए समझा जा सकता है कि प्रेरणा के द्वारा उपलब्धि तक पहुँचाना एक लंबी प्रक्रिया है। विभिन्न चरणों से गुजरते हुए ही उपलब्धि को प्राप्त किया जा सकता है।

अब अगर हम उपलब्धि के पास आकर देखे तो यह स्वयं में भी एक प्रेरणा है। अर्थात् जब व्यक्ति किसी प्रकार की बड़ी या छोटी उपलब्धि प्राप्त करता है तो उसे आंतरिक रूप से एक ऐसी शक्ति मिलती है जिसके बदौलत वह उस कार्य अर्थात् पाए गए उस उपलब्धि पर अधिक कार्य कर उसे जारी रखने या और बेहतर बनाने की कोशिश करता है। और यही (प्रेरणा) वह शक्ति है जो सफल व्यक्तियों को उसके कार्य के प्रति सजग, इमानदार व निष्ठावान बनाए रखता है।

### सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- कैटल, आर०बी० (1957) : अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व न्यूयार्क हाईकोर्ट।
- कपिल एच०के० (2010) : अनुसन्धान विधियाँ, हरि प्रसाद भार्गव, 4/230, कचहरी घाट, आगरा।
- गुप्ता, एस०पी० (2021) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- भटनागर, सुरेश (2020): शिक्षा मनोविज्ञान, आर० लाल बुक डिपो मेरठ।
- गुप्ता, एस०पी० 2019 : सांख्यिकीय विधियाँ, पुस्तक भवन प्रयाग राज।
- चौहान, एस०एस० (2007): एडवान्स एजुकेशन साइकोलोजी, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा०लि०।
- <https://www.safalfa.com>